International Journal of Applied Research 2022; 8(1): 69-72

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2022; 8(1): 69-72
www.allresearchjournal.com
Received: 07-11-2021
Accepted: 09-12-2021

डॉ. कीर्ति शुक्ला
अतिथि सहा.प्राध्यापक (शिक्षा),
लाइफ लॉंग लर्निंग विभाग,
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय,
रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. कीर्ति शुक्ला
अतिथि सहा.प्राध्यापक (शिक्षा),
लाइफ लॉंग लर्निंग विभाग,
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय,
रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

कोविड–19 वैश्विक महामारी के दौरान प्राथमिक कक्षाओं हेतु वैकल्पिक अकादमिक कैलेण्डर योजना पर विद्यार्थियों को सीखने के लिए साप्ताहिक योजना के क्रियान्वयन का समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ. कीर्ति शुक्ला

सारांश
प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य 'कोविड–19 महामारी के दौरान प्राथमिक कक्षाओं हेतु वैकल्पिक अकादमिक कैलेण्डर योजना पर विद्यार्थियों को सीखने के लिए साप्ताहिक योजना के क्रियान्वयन का समीक्षात्मक अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन में विद्यार्थियों को सीखने के लिए साप्ताहिक योजना के क्रियान्वयन का समीक्षात्मक अध्ययन करने के लिए रीवा विकासखण्ड के चार शहरी एवं चार ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित प्राथमिक विद्यालय के 80 विद्यार्थियों का चयन (10–10) दैव न्यादर्श पद्धति से किया गया है। शोध अध्ययन हेत शैक्षिक उपलब्धि हेतु स्वनिर्मित शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण पत्रक का प्रयोग किया गया। प्राप्त परिणामों से स्पष्ट है कि प्राथमिक कक्षाओं में वैकल्पिक अकादमिक कैलेण्डर योजना से शहरी एवं ग्रामीण विद्यालय के विद्यार्थियों को सीखने के लिए साप्ताहिक योजना के क्रियान्वयन से उनके शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है। प्राथमिक कक्षाओं में वैकल्पिक अकादमिक कैलेण्डर योजना से छात्र एवं छात्राओं को सीखने के लिए साप्ताहिक योजना के क्रियान्वयन से उनके शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

कूटशब्दः कोविड–19, प्राथमिक कक्षा, वैकल्पिक अकादमिक कैलेण्डर, साप्ताहिक योजना

प्रस्तावना
कोविड–19 से पूरी दुनिया प्रभावित हुई है, इससे सभी क्षेत्रों को भारी क्षति हुई है, जिसमें शिक्षा का क्षेत्र भी अछूता नहीं रहा। मार्च 2020 से लगभग सभी विद्यालय बंद हैं। इस दौरान, कोविड–19 के नियमों का पालन करते हुए, केंद्र व राज्य सरकारों की कई पहलों के माध्यम से विद्यार्थियों की औपचारिक शिक्षा निरंतर जारी है। इन विद्यार्थियों में से कई विद्यार्थी ऑनलाइन कक्षाओंमें भाग ले रहे हैं; तो कई विद्यार्थी टीवी पर पीएम ई–विद्या चैनल या राज्यों के क्षेत्रीय शैक्षिक चैनलों पर प्रसारित कक्षाएँ देख रहे हैं तथा जिन परिवारों के पास टीवी की सुविधा नहीं है, वे विद्यार्थी सामुदायिक रेडियो सुन रहे हैं, आदि।
विद्यार्थी अपने घरों तक ही सीमित हैं और यही हाल अधिकांश शिक्षकों और माता–पिता का है। शिक्षक–प्रशिक्षकों, शिक्षकों एवं माता–पिता को लॉकडाउन से उत्पन्न इस स्थिति से निपटने के तरीके खोजने की आवश्यकता है, ताकि विद्यार्थियों को घर पर शैक्षिक गतिविधियों के साथ सार्थक रूप से जोड़ा जा सके, जहाँ पर महामारी को रोकने के सभी प्रयास किए गए हैं, वहीं घर पर सीखना भी जारी है, ताकि शिक्षार्थियों की सीखने की प्रगति बढ़ती रहे।
शिक्षकों के पास साधनों की उपलब्धता के विकल्प को ध्यान में रखते हुए प्राथमिक स्तर (कक्षा 1 से 5 तक) के लिए एक सप्ताहवार योजना विकसित की गई है। सप्ताहवार योजना में शिक्षकों की सुविधा के लिए पाठ्यक्रम या पाठ्यपुस्तक से ली गई थीम अथवा अध्याय के साथ सीखने के प्रतिफलों को जोड़ते हुए रोचक गतिविधियाँ तथा चुनौतियाँ (उपकरणों की सुलभता और उपलब्धता में विविधता का ध्यान रखते हुए सभी संभावनाओ के साथ) शामिल हैं। फिर भी शिक्षकों को सलाह दी जाती है कि वे पाठ्यपुस्तक से परे जाकर अथवा अन्य शिक्षण–अधिगम सामग्री का प्रयोग करते हुए सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करने की दिशा में शिक्षार्थियों के अनुभवों का उपयोग करें। यहाँ यह उल्लेख किया जाता है कि वैकल्पिक अकादमिक कैलेंडर में शिक्षण–अधिगम गतिविधियाँ केवल सुझाई गई हैं, तथा इनकी प्रकृति आदेशात्मक नहीं हैं और न ही इनमें कोई अनुक्रम अनिवार्य हैं। शिक्षक एवं माता–पिता बच्चे की रुचि के अनुसार शिक्षण–अधिगम गतिविधियों का चयन कर सकते हैं, फिर चाहे वह किसी भी क्रम में क्यों न हो। यदि एक ही परिवार के बच्चे विभिन्न कक्षाओं में पढ़ते हैं, तो वे भाई–बहन संयुक्त रूप से एक ही गतिविधि में शामिल हो सकते हैं; यदि गतिविधियाँ

विभिन्न संज्ञानात्मक स्तरों को पूरा करती हैं, तो बड़े भाई–बहन छोटे भाई–बहन का मार्गदर्शन कर सकते हैं।

वैकल्पिक अकादमिक कैलेंडर में जहाँ भी संभव हुआ है, सझावात्मक यानी सुझाई गई गतिविधियों के साथ–साथ ई–संसाधनों की लिंक भी दी गई हैं। फिर भी यदि शिक्षार्थियों की इन ई–संसाधनों तक पहुँच संभव नहीं है, तो शिक्षक उन्हें मोबाइल फ़ोन के माध्यम से अन्य संदर्भ स्रोतों, जैसे – शब्दकोश, एटलस, समाचार शीर्षक, कहानी की पुस्तकें आदि का उपयोग करने के लिए मार्गदर्शन दे सकते हैं।

यदि व्हाटसऐप, गूगल हैंगआउट आदि जैसे साधनों का उपयोग किया जा रहा है, तो शिक्षक, विद्यार्थियों के समूह के साथ ऑडियो या वीडियो कॉल कर सकते हैं, और उनके साथ छोटे समूहों में या उन सभी के साथ चर्चा कर सकते हैं। शिक्षक, इन साधनों के माध्यम से विद्यार्थियों को सहपाठियों से सीखने या समूह में सीखने के लिए भी मार्गदर्शन दे सकते हैं।

ऐसी परिस्थितियों में जहाँ शिक्षक मोबाइल फ़ोन का उपयोग के वल कॉल करने या कॉल प्राप्त करने तथा संदेश भेजने के लिए कर रहे हैं, तो विद्यार्थियों या माता–पिता से व्यक्तिगत रूप से प्रतिदिन जुड़ना मुश्किल हो सकता है। शिक्षक परस्पर बात–चीत करने, समझाने एवं आकलन करने के लिए चरणबद्ध तरीके से विद्यार्थियों या माता–पिता को कॉल करने का विकल्प चुन सकते हैं। इसलिए, यह सुझाव दिया जाता है कि यह छोटे समूहों में ही किया जा सकता है, उदाहरण के लिए एक शिक्षक–शिक्षिका एक दिन (पहले दिन) में 15 विद्यार्थियों के माता–पिता को कॉल कर सकते हैं और अपने विद्यार्थियों को अपेक्षित कार्य समझा सकते हैं। दूसरे दिन, वे विद्यार्थियों की प्रगति का पता लगाने के लिए 15 में से 5 माता–पिता को कॉल कर सकते हैं। शेष 10 विद्यार्थियों की प्रगति तीसरे दिन (5 विद्यार्थी) और चौथे दिन (5 विद्यार्थी) तय की जाएगी। उसी दिन (दिन 2) वह अपेक्षित कार्य को समझाने के लिए अतिरिक्त 10 माता–पिता को कॉल कर सकते हैं। यह प्रक्रिया निरंतर चलती रहेगी, जिससे 40 शिक्षार्थियों की एक कक्षा का काम 8–10 दिन में पूरा हो जाएगा। इसी तरह वे यही प्रक्रिया विद्यार्थियों के दसरे समूह के लिए भी अपना सकते हैं। शिक्षक की शिक्षार्थियों के घर जाने की संभावना होने पर शिक्षक, जिनके पास कोई तकनीकी उपकरण या साधन नहीं हैं, उन शिक्षार्थियों के घरों की पहचान करके उनके घर जा सकते हैं तथा चरणबद्ध तरीके से उन विद्यार्थियों या उनके माता–पिता से घर पर संपर्क कर सकते हैं। शिक्षक, एक साथ माता–पिता या विद्यार्थियों के एक बड़े समूह को शिक्षण–अधिगम की गतिविधियाँ एक सामूहिक एसएमएस से भी भेज सकते हैं। शिक्षकों द्वारा अपनी आवाज़ यानी वॉइस या वीडियो पर रिकॉर्ड किए गए संदेश भी भेजे जा सकते हैं। इसी क्रम में माता–पिता भी शिक्षकों को एसएमएस और आवाज़ रिकॉर्ड किए गए संदेश के माध्यम से उत्तर दे सकते हैं। इस प्रकार इटंरनेट सुविधा न होने की स्थिति में मोबाइल कॉल, एसएमएस, आवाज़ रिकॉर्ड कर भेजे गए संदेश आदि कुछ ऐसे माध्यम हैं, जिनके द्वारा एक शिक्षक माता–पिता एवं विद्यार्थियों से जुड़ सकते हैं।

पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण

किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने कोविड–19 महामारी के दौरान प्राथमिक कक्षाओं हेतु वैकल्पिक अकादमिक कैलेण्डर योजना पर विद्यार्थियों को सीखने के लिए साप्ताहिक योजना के क्रियान्वयन का समीक्षात्मक अध्ययन पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान (2021–22) [1] दृष्टि (2020) [2] थोर्प, एल.वी. और सैमुलर, ए.एम. (1965) [3] ओल्पोर्ट, जी.डब्ल्यू (1937) [4] व खान, प्रो. एस. एच. और श्रीमती शुक्ला भट्टाचार्य (1987) [5] परवीन (2020) [6]

अध्ययन की आवश्यकता

कोविड–19 वैश्विक महामारी के दौरान हमारे शिक्षकों, अभिभावकों एवं विद्यार्थियों को समदुाय में इसके प्रसार को रोकने के लिए यथा संभव घर पर रहना पड़ रहा है। इस स्थिति में हमारी यह ज़िम्मेदारी है कि हम उन्हें रोचक गतिविधियों के माध्यम से घर पर सीखने के कई वैकल्पिक तरीके सुझाएँ। यह इसलिए ज़रूरी है कि तनाव के वर्तमान परिवेश में हमें न सिर्फ़ अपने बच्चों को व्यस्त रखना है, बल्कि कक्षाओं में उनकी पढ़ाई की निरंतरता भी बनाए रखनी है। इस संदर्भ में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने वर्ष 2020–21 के लिए विद्यालयी शिक्षा के सभी चरणों के लिए एक वैकल्पिक अकादमिक कैलेंडर विकसित के क्रियान्वयन से शोध क्षेत्र में शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. प्राथमिक विद्यालयों के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. प्राथमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना

एच 1. "प्राथमिक कक्षाओं में वैकल्पिक अकादमिक कैलेण्डर योजना से शहरी एवं ग्रामीण विद्यालय के विद्यार्थियों को सीखने के लिए साप्ताहिक योजना के क्रियान्वयन से उनके शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।"

एच 2. "प्राथमिक कक्षाओं में वैकल्पिक अकादमिक कैलेण्डर योजना से छात्र एवं छात्राओं को सीखने के लिए साप्ताहिक योजना के क्रियान्वयन से उनके शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।"

परिसीमाएँ

1. शोध का क्षेत्र रीवा जिले के रीवा विकासखण्ड तक ही लिया गया है।
2. प्रस्तुत अध्ययन प्राथमिक स्तर तक के विद्यार्थियों तक ही सीमित रहेगा।
3. अध्ययन में मात्र कक्षा तीन से पॉचवी तक के छात्र–छात्राओं को सम्मिलित किया गया हैं
4. अध्ययन की सुविधा हेतु मात्र 80 विद्यार्थियों को चुना गया है, जिसमें 40 ग्रामीण एवं 40 शहरी क्षेत्र अथवा 40 बालक एवं 40 बालिकाएँ सम्मिलित है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन में रीवा विकासखण्ड के चार शहरी एवं चार ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का चयन (10–10) दैव न्यादर्श पद्धति से किया गया है।

उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु शैक्षिक उपलब्धि हेतु स्वनिर्मित शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण पत्रक का प्रयोग किया गया।

विधि एवं योजना

योजना के अंतर्गत निम्नांकित अनुसंधान योजना प्रस्तावित है – प्रस्तुत शेध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। जिसमें

कोविड–19 महामारी के दौरान प्राथमिक कक्षाओं हेतु वैकल्पिक अकादमिक कैलेण्डर योजना पर विद्यार्थियों को सीखने के लिए साप्ताहिक योजना के क्रियान्वयन का अध्ययन किया गया इसमें रीवा जिले के रीवा विकासखण्ड के अन्तर्गत 4–4 ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में स्थिति विद्यालयों को लिया गया है।

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है। सर्वेक्षण विधि वर्णनात्मक अनुसंधान की मुख्य विधियों में से एक है। वर्णनात्मक अनुसंधान में शोध का संबंध वर्तमान से होता है। यह वर्तमान के तत्वों परिस्थितियों के संबंध में व्यक्तियों, वस्तुओं घटनाक्रमों आदि के विशय में प्रपत्र एकत्रित कर उनका विश्लेषण, विवेचन वर्गीकरण तथा मापन आदि का कार्य करता है।

इस प्रकार सर्वेक्षण अध्ययनों से स्पष्ट तथा निश्चित उद्देश्यों की पूर्ति होती है। इन्हीं विशेषताओं के कारण प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण अनुसंधान का उपयोग किया गया है।

सांख्यिकीय विश्लेषण

प्राप्त प्रदत्तों के विश्लेषण एवं परिकल्पना की जांच हेतु मध्यमान, मानक विचलन, टी–टेस्ट, सहसंबंध गुणांक की गणना की गयी है।

परिणाम एवं विश्लेषण

परिकल्पना क्रमांक –1 : "प्राथमिक कक्षाओं में वैकल्पिक अकादमिक कैलेण्डर योजना से शहरी एवं ग्रामीण विद्यालय के विद्यार्थियों को सीखने के लिए साप्ताहिक योजना के क्रियान्वयन से उनके शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक 1: प्राथमिक कक्षाओं में वैकल्पिक अकादमिक कैलेण्डर योजना से शहरी एवं ग्रामीण विद्यालय के विद्यार्थियों को सीखने के लिए साप्ताहिक योजना के क्रियान्वयन से उनके शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

क्रमांक	समूह	N	M	SD	df	t-value
1.	शहरी	40	38.7	10.1	78	2.14
2.	ग्रामीण	40	34.3	6.4		

स्वतंत्रता के अंश 78 पर सार्थक

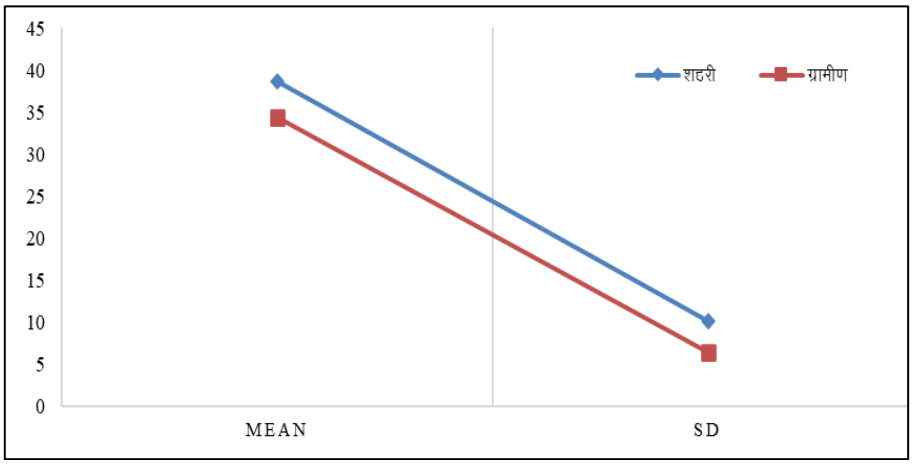

आरेख 1: प्राथमिक कक्षाओं में वैकल्पिक अकादमिक कैलेण्डर योजना से शहरी एवं ग्रामीण विद्यालय के विद्यार्थियों को सीखने के लिए साप्ताहिक योजना के क्रियान्वयन से उनके शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

उपरोक्त सारणी एवं आरेख क्रमांक 1 से स्पष्ट है कि प्राथमिक कक्षाओं में वैकल्पिक अकादमिक कैलेण्डर योजना से शहरी विद्यालय के विद्यार्थियों को सीखने के लिए साप्ताहिक योजना के क्रियान्वयन से उनके शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 38.7 एवं प्रमाणिक विचलन 10.1 है। इस प्रकार प्राथमिक कक्षाओं में वैकल्पिक अकादमिक कैलेण्डर योजना से ग्रामीण विद्यालय के विद्यार्थियों को सीखने के लिए साप्ताहिक योजना के क्रियान्वयन से उनके शैक्षिक उपलब्धि का माध्यमान 34.3 एवं प्रमाणिक विचलन 6.4 है। तथा प्राप्त 't' का मूल्य 2.14 है। इस प्रकार गणना से प्राप्त 't' का मान 0.05 सार्थकता स्तर पर 't' के सारणी मूल्य 1.99 से अधिक है। अर्थात् अन्तर सार्थक है। अतः परिकल्पना असत्य होती है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि प्राथमिक कक्षाओं में वैकल्पिक अकादमिक कैलेण्डर योजना से शहरी एवं ग्रामीण विद्यालय के विद्यार्थियों को सीखने के लिए साप्ताहिक योजना के क्रियान्वयन से उनके शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है।

परिकल्पना क्रमांक 2 : "प्राथमिक कक्षाओं में वैकल्पिक अकादमिक कैलेण्डर योजना से छात्र एवं छात्राओं को सीखने के लिए साप्ताहिक योजना के क्रियान्वयन से उनके शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक 2 : प्राथमिक कक्षाओं में वैकल्पिक अकादमिक कैलेण्डर योजना से छात्र एवं छात्राओं को सीखने के लिए साप्ताहिक योजना के क्रियान्वयन से उनके शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

क्रमांक	समूह	N	M	SD	df	t-value
1.	छात्र	40	38.9	10.3	78	1.64
2.	छात्राएँ	40	35.2	7.1		

स्वतंत्रता के अंश 78 पर सार्थक

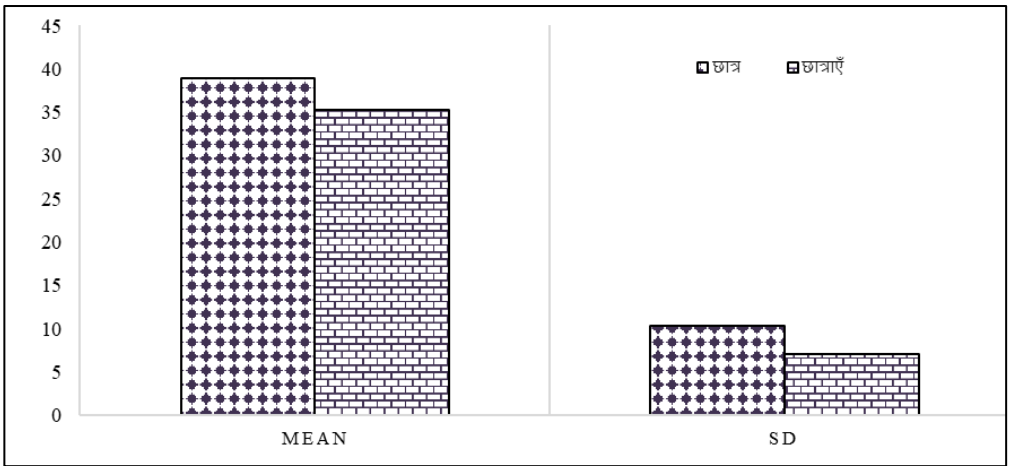

आरेख 2: प्राथमिक कक्षाओं में वैकल्पिक अकादमिक कैलेण्डर योजना से छात्र एवं छात्राओं को सीखने के लिए साप्ताहिक योजना के क्रियान्वयन से उनके शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

उपरोक्त सारणी एवं आरेख क्रमांक – 2 से स्पष्ट है, कि प्राथमिक कक्षाओं में वैकल्पिक अकादमिक कैलेण्डर योजना से छात्रों को सीखने के लिए साप्ताहिक योजना के क्रियान्वयन से उनके शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 38.9 एवं प्रमाणिक विचलन 10.3 है इसी प्रकार प्राथमिक कक्षाओं में वैकल्पिक अकादमिक कैलेण्डर योजना से छात्राओं को सीखने के लिए साप्ताहिक योजना के क्रियान्वयन से उनके शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 35.2 एवं प्रमाणिक विचलन 7.1 है। तथा 't' का प्राप्त मूल्य 1.64 है। इस प्रकार गणना से प्राप्त 't' का मान 0.05 सार्थकता स्तर पर 't' के सारणी मूल्य 1.99 से कम है। अर्थात् अन्तर सार्थक नहीं है। अतः परिकल्पना सत्य होती है।

इस प्रकार स्पष्ट है, कि प्राथमिक कक्षाओं में वैकल्पिक अकादमिक कैलेण्डर योजना से छात्र एवं छात्राओं को सीखने के लिए साप्ताहिक योजना के क्रियान्वयन से उनके शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष

कोविड–19 महामारी के दौरान प्राथमिक कक्षाओं हेतु वैकल्पिक अकादमिक कैलेण्डर योजना पर विद्यार्थियों को सीखने के लिए साप्ताहिक योजना के क्रियान्वयन के पश्चात् निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए –

- प्राथमिक कक्षाओं में वैकल्पिक अकादमिक कैलेण्डर योजना से शहरी एवं ग्रामीण विद्यालय के विद्यार्थियों को सीखने के लिए साप्ताहिक योजना के क्रियान्वयन से उनके शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है।
- प्राथमिक कक्षाओं में वैकल्पिक अकादमिक कैलेण्डर योजना से छात्र एवं छात्राओं को सीखने के लिए साप्ताहिक योजना के क्रियान्वयन से उनके शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

संदर्भ

1. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, प्रथम संस्करण 2021–22.
2. दृष्टि, शिक्षा प्रणाली पर कोविड–19 महामारी का प्रभाव, 5 अगस्त, 2020.
3. थोर्प, एल.वी. और सैमुलर, ए.एम. : 'पर्सनाल्टी एण्ड इन्टर डिस्सपलीनरी एपरोज' न्यूयार्क : एन ईस्ट–वेस्ट एड., 1965.
4. ओल्पोर्ट, जी.डब्ल्यू : 'व्यक्तित्व' ए साइकोलोजीकल इन्टरप्रिटेशन, न्यूयार्क : हाल्ट, 1937.
5. खान, प्रो. एस. एच. और श्रीमती शुक्ला भट्टाचार्य, अध्यापकीय दर्शिका : परिवेशीय अध्ययन–कक्षा 1. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली (भारत), 1987, पृष्ठ 44.
6. परवीन, डॉ. नाज – करोना महामारी और शिक्षा : शिक्षा को बचाने की चुनौती समाज के सामने अगला संकट है, अमर उजाला, 23 सितम्बर 2020.